eISSN 3049-2610

RESEARCH STREAM

A Bi-Annual, Open Access Pear Reviewed International Journal

Volume 01, Issue 01, October 2024

मुक्तिबोध के काव्य में मानववाद

डॉ0 प्रियंका रानी[1]

सहायक प्रोफेसर. हिन्दी विभाग, राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बिन्दकी, फतेहपुर।

Received: 20 Oct 2024 Accepted & Reviewed: 25 Oct 2024, Published : 31 Oct 2024

Abstract

गजानन माधव मुक्तिबोध को प्रगतिवादी काव्य एवं नई कविता के मध्य एक सेतु के रूप में माना जाता है। उनके काव्य पर मार्क्सवाद का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है। इनका काव्य मानवतावाद का पोषक और आर्थिक एवं राजनीतिक शोषण को निरूपित करने वाला कहा जा सकता है। मुक्तिबोध को सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के साथ भारत में आधुनिक हिंदी कविता का अग्रदूत माना जाता है।उनकी पुस्तक चिदम्बरा के लिए उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।उनकी प्रमुख कृतियों में चांद का मुंह टेढ़ा, कठ का सपना, उठता आदमी, आदि सम्मिलित हैं।प्रस्तुत शोध पत्र उनकी कृतियों की विशेषताओं को निरूपित करता है।

कीवर्ड- मानवतावाद, मार्क्सवाद शोषण, आधुनिक हिंदी काव्य, आर्थिक नीति आदि।

Introduction

मानववादी तथा मानवतावादी विचार धारायें मनुष्यता (मानव जाति) की, सब प्रकार के बन्धनों से मुक्ति चाहते हुए तथा अभ्युदय के समर्थक होते हुए भी उनमें अन्तर पाया जाता है। मानववाद मानवतावाद का प्रथम सोपान माना जाता है। मानववाद मानव जाति तक ही सीमित है किन्तु मानवतावाद मानव जाति मात्र नहीं मानवेतर समग्र जीवधारियों तक व्यापक है। ''सार्वभौम कल्याण के लिए मानवतावाद तथा मानववादी विचारधाराएँ पल्लवित हुई । दोनों विचारधाराओं की प्रक्रिया में अन्तर होने पर भी लक्ष्य में प्रायः किसी सीमा तक समानता मिलती है किन्तु अन्तिम उपलब्धियों में अन्तर है, क्योंकि मानववाद में जहाँ अनेक अनुबन्ध और विचारों का मतभेद है उसे सहज स्वीकार्य है।[1]

''मानवतावाद अट्ठारहवीं शती के पाश्चात्य विचारों द्वारा प्रतिपादित एक सिद्धान्त है जिसमें ईश्वर के स्थान पर मनुष्य की महिमा को प्रतिष्ठित करने का आयोजन है। मानववाद के अन्तर्गत सृष्टि के समस्त कार्य व्यापार व्यक्ति को केन्द्र मानकर उसके हित और उन्नयन की दृष्टि से ही सम्पन्न करने का भाव है। इसके विपरीत मानवतावाद मनुष्य के मन की वह निःसर्ग उदात्त प्रवृत्ति है जिसमें समस्त प्राणि जगत के लिए संवेदना, सहानुभूति और सहयोग का भाव निहित होता है।[2]

यूरोप में 18वीं 19वीं शती में व्यक्ति की महिमा को प्रतिष्ठित करने का जो प्रयास हुआ उसे वहाँ मानववादी (हयुम्यानिस्टोक) विचारधारा का नाम दिया गया। इसी विचार धारा के अन्तर्गत मनुष्य को भौतिक जीवन में अधिक से अधिक सुखी बनाने का संकल्प था।[3] मानववाद व्यक्ति के जीवन में उच्च मूल्यों का निर्देशन करता है। शहर के बाहर नाले के किनारे वासित तथा पीड़ित शोषित वर्ग की दर्दभरी कराहने की पुकार सुनाई दे रही है।

"-- किन्हीं दानवी हाथों घुटते हुए कण्ठ
से उठती एकाकी पुकार
उदभ्रान्त विलक्षण व्याकुल एकाकी अपार।
चीत्कारों का क्रम, घोर ठहाकों का दानवी अनुक्रम--।[4]

© RESEARCH STREAM JOURNAL, 2024

eISSN 3049-2610
RESEARCH STREAM
A Bi-Annual, Open Access Pear Reviewed International Journal
Volume 01, Issue 01, October 2024

शोषक वर्ग दानव के रूप में शोषित दल का गला घोंट रहा है अर्थात् निर्दयता पूर्वक भयंकर शोषण कर रहा है। फलस्वरूप पीड़ित शोषितों से चीत्कार निकलती है, इन चीत्कारों पर निर्दयी शोषक वर्ग हर्ष मनाता है।

"आज के अभाव के व कल के उपवास के
व परसों की मृत्यु के--
दैन्य के, महा-अपमान के, वक्षोभपूर्ण
भयंकर चिन्ता के उस पागल यथार्थ का
दीखता पहाड़----।[5]

शोषितों में व्याप्त वेदनानुभूति की ओर कवि ने दृष्टिपात कर उनकी अभावग्रस्त जिन्दगी, उपवासों का क्रम मृत्यु का विकराल रूप, दीनता, अपमान तथा क्षोभपूर्ण चिन्ता का दर्शन किया है। कवि वेदना को काले पहाड़ के रूप में संबोधित कर वेदना के भयंकर रूप का दर्शन कराना चाहा है।

"भयानक, हाय, अन्धा दौर
जिन्दा छातियों पर और चेहरों पर
क़दम रखकर चले हैं पैर !
अनगिन अग्रिमय तन-मन व आत्माएँ
व उनको प्रश्न-मुद्राएँ
हृदय की धुनि-प्रभाएँ,
जन समस्याएँ
कुचलता चल निकलता हूँ।
हर पल चीखता हूँ, शोर करता हूँ
कि वैसी चीखती कविता बनाने में लजाता है।[6]

कवि भयंकर शोषण नीति को दर्शाते हुए कह रहा है कि उस शोषण नीति के फलस्वरूप शोषितों की भावनाएं इच्छाएं कुचले जाने से उनकी अंतर की आह निकलती रहती है और वे चीख-चीखकर मर-मर के जी लेते हैं।

"शोषण की सभ्यता के नियमों के अनुसार
बनी हुई संस्कृति के तिलिस्मी
सियाह चक्रव्यूहों में
फँसे हुए प्राण सब मुझे याद आते हैं
मर्महित कातर पुकार सुन पड़ती है
मेरी ही पुकार-जैसी चिन्तातुर समुद्विग्र।[7]

मार्क्स की मानववादी मान्यताएँ हैं। मनुष्य ही उनके दर्शन का केन्द्र स्थान है। उनके अनुसार मानव की चेतना का मूल आधार सामाजिक तथा आर्थिक स्थिति को मानते हैं। मानव को उसकी लुप्त हुई मानवता का पुनः स्थापन करना है। मुक्त मानव की स्थिति साम्यवादी समाज में मात्र संभव है। साम्यवाद एक नये मानव की कल्पना करता है जो बौद्धिक संपन्न, नैतिक विशुद्ध और शारीरिक पूर्णता का समन्वय होगा। ऐसे मानव की मार्क्सवाद कल्पना करता है।

आर्थिक परिस्थितियाँ समाज के इतिहास की गति में परिवर्तनता का कारण बन सकती हैं। इसके साथ ही अन्य कारण भी हो सकते हैं जिनके कारण वश इतिहास परिवर्तन हो सकता है। उदाहरण समाज में प्रचलित कानून, संस्कार,

© RESEARCH STREAM JOURNAL, 2024

eISSN 3049-2610
RESEARCH STREAM
A Bi-Annual, Open Access Pear Reviewed International Journal
Volume 01, Issue 01, October 2024

स्वभाव, दार्शनिक सिद्धान्त, धार्मिक परम्पराये, विचार आदि। राल्फ फाक्स के शब्दों में ''मार्क्सवाद के दर्शन का मध्य बिन्दु मानव ही है। सच है कि मार्क्सवाद के अनुसार भौतिक परिस्थितियाँ मानव की चेतना को बदल सकती है, किन्तु साथ ही मार्क्सवाद पूरी बुलन्दी से यह भी घोषित करता है कि वह मानव ही है जो भौतिक परिस्थितियों को बदलता है और ऐसा करने के दौरान खुद को भी बदल देता है।[8]

मार्क्सवाद दैवी, शक्ति, ईष्वर तथा ब्रह्म आदि पर विश्वास नहीं रखते अपितु उन्हें मानव शक्ति बुद्ध पर सम्पूर्ण विश्वास है। मुक्तिबोध खुद अपनी एक अरूप शून्य के प्रति शीर्षक कविता में कहते हैं -

"मेरे इस साँवले चेहरे पर कीचड़ के धब्बे हैं. दाग हैं,
और इस फैली हुई हथेली पर जलती हुई आग है अग्नि विवेक की
नहीं, नहीं, वह तो है ज्वलन्त सरसिज
जिन्दगी के दल-दल-कीचड़ में धंसकर
मैं वह कमल तोड़ लाया हूँ-
भीतर से, इसीलिए, गीला हूँ
पंक से आवृत्त,
स्वयं में घनीभूत
मुझे तेरी बिल कुल जरूरत नहीं है।

कवि ने प्रस्तुत कविता द्वारा ईश्वर की खोखली सत्ता का खंडन किया है और मानव की अद्‌भुत शक्ति का प्रतिष्ठापन किया है। कवि कहता है मैंने अनेक संकटों को सहकर तथा भोगकर अपनी अद्‌भुत शक्ति द्वारा क्रान्तिकर स्वराज्य पाया है। मुझे तेरी किसी बात की भी जरूरत नहीं है। मैं खुद स्वतंत्र, सशक्त और विवेकशील हूँ।

"मार्क्सवाद अध्यात्मवाद पर भौतिकवाद की विजय घोषणा करते हुए कल्पित ईश्वर के स्थान पर प्रत्यक्ष मानव को अध्ययन मनन का केन्द्र बिन्दु स्वीकार किया है ।

"नये मनुज की वक्र भृकुटि
जलती आँखों में
एक विश्व व्यापी सपने के मद को
चिर दिन तिरते देखा

मानव सर्वरूपेण, सर्वक्षेत्र में स्वतंत्र-सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक आदि दृष्टियों से और सर्वबन्धन तथा नियन्त्रणों से मुक्त होना ही मानव मुक्ति हो सकती है। कवि मुक्तिबोध अपने काव्य में मानव मुक्ति की अपेक्षा करते हैं। अतः मानवमुक्ति संबंधी मुक्तिबोध के अनेक विचार उनके काव्य में दृष्टव्य हैं। वे मानवमुक्ति तथा मानवता के सबल समर्थक हैं और मानव प्रेमी हैं।

"दस्यु-पराक्रम
शोषण पाप का परम्परा-कम
वक्षासीन है.
जिसके कि होने से गहन अंशदान
स्वयं तुम्हारा !!
इसीलिए जब तक उसकी स्थिति है,

© RESEARCH STREAM JOURNAL, 2024

eISSN 3049-2610
RESEARCH STREAM
A Bi-Annual, Open Access Pear Reviewed International Journal
Volume 01, Issue 01, October 2024

मुक्ति न तुमको ।
याद रखो,
कभी अकेले में मुक्ति न मिलती,
यदि वह है तो सबके ही साथ है।

चम्बल की घाटी शीर्षक कविता में कवि सामूहिक मुक्ति की तलाश करते हैं । मसीहा और डाकू में अन्तर है कि एक आतंकवादी होता है तो दूसरा आइडियालाजी से जुड़ा हुआ होता है। शैतान मनुष्य के बाहर नहीं, उसके भीतर है, उसकी पाप करने की इच्छा ही शैतान है।

जब तक शोषण पाप का परंपरा क्रम मौजूद है, जिसके लिए सामाजिक व्यवस्था जिम्मेदार है, जब तक उसकी स्थिति है, व्यवस्था है, मुक्ति नहीं मिलेगी। सुरेन्द्र प्रताप का यह कथन तर्क संगत जान पड़ता है। परम्परागत शोषकों का रूप दस्यु के स्वरूप शोषितों पर चला आया है। शोषकों के जीते जी सर्वहारा को कोई अधिकार तथा स्वातन्त्र्य नहीं के बराबर है। सर्वहारा को शोषकों के शिकंजे से मुक्त होना है तो वह अकेले में दुस्साध्य है।

सन्दर्भ ग्रन्थ-

1. डॉ0 ब्रजभूषण शर्मा: मानववाद तथा मानवतावाद पृ0 116।
2. डॉ0 देवेश ठाकुर: आधुनिक हिन्दी साहित्य की मानवतावादी भूमिकाएँ पृ0 13।
3. डॉ0 देवेश ठाकुर: आधुनिक हिन्दी साहित्य की मानवतवादी भूमिकाए पृ0 02।
4. मुक्तिबोध रचनावली (प्रथम खण्ड) सूरज के सांझ रंगी ऊँची लहरों पृ0 304।
5. वही (प्रथम खण्ड) मुझे याद आते है पृ0 290।
6. वही (द्वितीय खण्ड) चकमक की चिन्गारियाँ पृ0 252-53।
7. वही (प्रथम खण्ड) मुझे याद आते है पृ0 211।
8. राल्फ फाल्स: नावेल एण्ड द पीपुल पृ0 14।

© RESEARCH STREAM JOURNAL, 2024